उत्तर प्रदेश में कीटनाशकों के कारण मृत्यु

656. **श्री अजीत जोगी:**
कुमारी आलिया:

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या यह सच है कि उत्तर प्रदेश में वर्ष 1986 से अभी तक कीटनाशकों के कारण काफी लोगों की मृत्यु हुई है; और

(ख) यदि हां, तो सरकार ने ऐसी मौतों की रोक-थाम के लिए क्या कदम उठाये हैं?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री नितिश कुमार): (क) जी हां।

(ख) कीटनाशक दवाएं स्वभाव से ही जहरीली होती हैं, क्योंकि इनका उद्देश्य कीटों को मारना होता है। तथापि, कीटनाशी अधिनियम, 1968 के तहत गठित रजिस्ट्रेशन समिति ने देश में केवल उन कीटनाशक दवाओं के इस्तेमाल की इजाजत दे दी है, जो सावधानी से और निर्धारित परिस्थितियों में इस्तेमाल करने पर मानव एवं पर्यावरण के लिए सुरक्षित हैं। यह समिति अधिक विषैली कीटनाशक दवाओं के केवल और अधिक सुरक्षित सूत्रीकरण की अनुमति देती है। तथापि, इनके इस्तेमालकर्त्ताओं के अनुचित इस्तेमाल, इस्तेमाल के समय आकस्मिक अनावरण, भोजन अथवा जल के साथ कीटनाशियों का आकस्मिक संदूषण अथवा व्यक्ति द्वारा जानबूझकर आत्महत्या के कारण मौतें हुई हैं। केन्द्र सरकार कीटनाशक दवाओं के सुरक्षित और उचित इस्तेमाल में राज्य सरकारों और किसान कार्यकर्त्ताओं के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम चला रही है। किसानों को कीटनाशक दवाओं का उचित इस्तेमाल करने के लिए प्रशिक्षण देने और शिक्षित करने में राज्य सरकारों के विस्तार कार्यकर्त्ताओं द्वारा काफी कार्य किया जा रहा है। रजिस्ट्रेशन समिति ने भी कीटनाशक दवाओं के इस्तेमाल में सुरक्षा सम्बन्धी सावधानियां बरतने के लिए हिदायतें निर्धारित की हैं, जो कि सभी सूत्रों के पैकेजों पर लेबल और पर्चियां मुद्रित होनी चाहिए। इन हिदायतों को सभी विनिर्माता क्रियान्वित कर रहे हैं।

सुपारी का उत्पादन

657. **श्री अजीत जोगी:**
कुमारी आलिया:

क्या कृषि मंत्री यह बताने कृपा करेंगे कि:

(क) प्रमुख सुपारी उत्पादक राज्यों के क्या नाम हैं और सुपारी की सर्वाधिक खपत वाले राज्यों के नाम क्या-क्या हैं;

(ख) पिछले तीन वर्षों में इसके उत्पादन का कितना लक्ष्य निर्धारित किया गया था और वास्तव में इसके उत्पादन का कितना लक्ष्य प्राप्त किया गया;

(ग) सुपारी की मांग और पूर्ति के बीच अंतर को पाटने और सुपारी के उत्पादन को प्रोत्साहन देने के लिए क्या कदम उठाये गये हैं या उठाये जाने का विचार है;

(घ) पिछले तीन वर्षों के दौरान सुपारी का कितना आयात किया गया; और

(ङ) सुपारी के मूल्यों में निरन्तर वृद्धि होने के क्या कारण हैं और इसके मूल्यों को स्थिर रखने के लिए क्या कदम उठाये गये हैं?

कृषि मंत्रालय में कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री नितिश कुमार): (क) प्रमुख सुपारी उत्पादक राज्य असम, कर्नाटक तथा केरल हैं। खपत करने वाले प्रमुख राज्य उत्तर प्रदेश, गुजरात, बिहार तथा राजस्थान हैं।

(ख) सुपारी के उत्पादन के लिए कोई लक्ष्य निर्धारित नहीं किये गए हैं। गात तीन वर्षों के दौरान सुपारी का उत्पादन नीचे दिया गया है:

वर्ष	उत्पादन
1986-87	2,19,000
1987-88	2,26,700
1988-89	2,46,100

(ग) उत्पादन के वर्तमान स्तर आन्तरिक खपत की आवश्कताओं को पूरा कर रहे हैं। चूंकि उत्पादन मांग के अनुरूप है अतः भारत सरकार ने सुपारी के उत्पादन को बढ़ाने के लिए कोई केन्द्रीय या केन्द्र द्वारा प्रायोजित योजना नहीं चलाई है।

(घ) पिछले तीन वर्षों के दौरान सुपारी का कोई आयात नहीं किया गया था।

(ङ) 1988-89 से सुपारी की कीमतें धीरे-धीरे बढ़ने

लगी। इस अवधि से पहले मूल्यों में 40 से 50% तक की तेज गिरावट आयी थी। मूल्यों में वर्तमान बढ़ोत्तरी का मुख्य कारण 1989-90 के दौरान उत्पादन के स्तर में आई हल्की गिरावट है। केरल और कर्नाटक सरकारों का संयुक्त उद्यम केन्द्रीय सुपारी तथा नारियल विपणन तथा प्रोसेसिंग कोआपरेटिव प्रमुख उत्पादन केन्द्रों से सुपारी की अधिप्राप्ति कर रहा है और इसे खपत वाले राज्यों में बेच रहा है। यह उपाय मूल्यों में इस अल्पावधि उतार-चढ़ाव को स्थिर करने में सहायता करेगा।

उर्वरकों का आयात

658. **श्री अजीत जोगी:**
कुमारी आलिया:

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) वर्ष 1987-88 और 1988-89 के दौरान कितनी-कितनी मात्रा में उर्वरकों का आयात किया गया;

(ख) ऐसे आयातों पर भारतीय मुद्रा में और विदेशी मुद्रा में अलग-अलग कितनी धनराशि खर्च हुई; और

(ग) वर्ष 1990-91 में कितनी मात्रा में उर्वरकों के आयात किये जाने की संभावना है और इस आयात के लिए कितनी विदेशी मुद्रा की जरूरत है?

कृषि मंत्रालय में ग्रामीण विकास विभाग में राज्य मंत्री (श्री उपेन्द्र नाथ वर्मा): (क) 1987-88 और 1988-89 के दौरान आयातित उर्वरकों की मात्रा नीचे दी गयी है:—

	लाख टन
1987-88	17.30
1988-89	26.82

(ख) 1987-88 और 1988-89 के दौरान विभिन्न स्रोतों से उर्वरकों के आयात पर उठायी गयी लागत और भाड़ा निम्न प्रकार है:—

(लागत और भाड़ा)
(मूल्य रुपये करोड़ों में)

वर्ष	विदेशी मुद्रा	भारतीय मुद्रा	योग
1987-88	123.37	100.40	223.77
1988-89	468.51	176.01	644.52

(ग) ब्योरे देना जनहित में नहीं होगा।

Conversion of Ballia Shahganj M.G. into B. G.

659. SHRI ISH DUTT YADAV: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that there has been persistent public demand and also from MPs for the conversion of Ballia Shahganj Metre gauge line into broad gauge;

(a) if so, whether Government propose to convert the above mentioned metre gauge line into broad gauge:

(a) if so, by when the work is likely to be taken up; and

(a) if the answer to part (b) above be in the negative what are the reasons therefor?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI AJAY SINGH): (a) Yes, Sir.

(b) and (c) No,. Sir. However, only Phephna-Ballia section has been approved for conversion into BG, as a part of Aunrihar-Chhapra gauge conversion project.

(d) Constraint of resources and heavy commitments on hand.